विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की आलोचनात्मक दृष्टि

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
विश्वविद्यालय प्रभाग
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
(संसदीय अधिनियम 14 सन् 1964 द्वारा घोषित राष्ट्रीय महत्व की संस्था)
की
पीएच. डी. (हिन्दी) उपाधि निमित्त परीक्षणार्थ प्रस्तुत शोध–प्रबंध
Dissertation submitted for the Ph.D. Degree
(अगस्त, 2012)

ए. फ़ातिमा 16.08.12

:अनुसंधात्री:
ए. फ़ातिमा

क्रमांक :

डॉ. पी. नज़ीम् बेगम् 16/08/12

:विभागाध्यक्षः
प्रो. (डॉ०) निर्मला एस. मौर्य
एम.ए., पीएच.डी., डी.लिट्.
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

:निर्देशिका:
डॉ० पी. नज़ीम् बेगम्, एम.ए., पीएच.डी.
रीडर
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

Dr. NIRMALA S. MOURYA
PROFESSOR & HEAD OF DEPARTMENT
UCHCH SHIKSHA AUR SHODH SANSTHAN
DAKSHIN BHARAT HINDI PRACHAR SABHA
CHENNAI - 600 017.

Dr. P. NAZEEM BEGUM
READER
UCHCH SHIKSHA AUR SHODH SANSTHAN
DAKSHIN BHARAT HINDI PRACHAR SABHA
CHENNAI - 600 017.

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की आलोचनात्मक दृष्टि

विषयानुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी का जीवन एवं साहित्य

पृष्ठ संख्या

1.0 विषय प्रवेश	1
1.1 विश्वनाथ प्रसाद तिवारी का जीवन	2
1.1.1 जन्म एवं बाल्यावस्था	3
1.1.2 शिक्षा	5
1.1.3 गुरुजन एवं हिन्दी प्रेरणा	5
1.1.4 कार्यक्षेत्र	6
1.1.5 रुचि–रचनात्मक अभिरुचियाँ	6
1.1.6 साहित्यिक क्रियाकलाप	6
1.1.7 सिद्धान्त स्वतंत्रता	7
1.1.8 धर्म संबंधी विचार	8
1.1.9 हिन्दी सेवा	8
1.1.10 पुरस्कार एवं सम्मान	9
1.2 विश्वनाथ प्रसाद तिवारी का साहित्य	9
1.2.1 आलोचनात्मक रचनाएँ	10
1.2.2 संस्मरण	14

1.2.3 यात्रा संस्मरण 15

1.2.4 कविता 16

1.2.5 साक्षात्कार ग्रंथ 17

1.2.6 रचनाओं के अनुवाद 17

1.2.7 प्रकाशित रचनाएँ 17

1.2.8 संपादन कार्य 17

1.2.9 संगोष्ठियों में भागीदारी 18

1.2.10 शोध अनुभव 19

1.2.11 दस्तावेज़ पत्रिका का संपादन 19

1.3 निष्कर्ष 20

द्वितीय अध्याय

आलोचना की परिभाषा एवं स्वरूप–एक अवलोकन

2.0 विषय प्रवेश 21

2.1 आलोचना का अर्थ 21

2.2 आलोचना की परिभाषा 22

2.3 आलोचना और कवि–कर्म 26

2.4 आलोचना पद्धति 27

2.5 आलोचना की उपादेयता 29

2.6 आलोचना का स्वरूप 31

2.7 आलोचना के प्रकार 34

2.8 आलोचक से अपेक्षाएँ 43

2.9 हिन्दी आलोचना साहित्य का विकास एवं प्रमुख आलोचक 44

2.10 निष्कर्ष 54

तृतीय अध्याय

'आधुनिक हिन्दी कविता'-आलोचनात्मक दृष्टि

3.0 विषय प्रवेश 56

3.1 राष्ट्रीय नवजागरण की सांस्कृतिक चेतना: मैथिलीशरण गुप्त 57

3.2 देशप्रेम , स्वतंत्रता और जनचेतना का काव्य: रामनरेश त्रिपाठी 59

3.3 विषमता की पीड़ी और समरसता का दर्शन: जयशंकर प्रसाद 61

3.4 एक भारतीय आत्मा का काव्य: माखनलाल चतुर्वेदी 64

3.5 वह एक और मन रहा राम का जो न थका: सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' 66

3.6 एक काव्य–यात्रा की सीमाएँ: सुमित्रानन्दन पंत 68

3.7 अस्तित्व की जिज्ञासा काव्य: भगवतीचरण वर्मा 70

3.8 कविता का लोक राग: सुभद्रा कुमारी चौहान 72

3.9 प्राण रहने दो अकेला: महादेवी वर्मा 75

3.10 कविता का निजी संसार: हरिवंशराय बच्चन 76

3.11 नरत्व और नारीत्व का अनुपात: रामधारी सिंह दिनकर 78

3.12 व्यक्तित्व और स्वातन्त्र्य की खोज : सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' 80

3.13 परम्परा की स्वीकृति का काव्य: नरेन्द्र शर्मा 83

3.14 निष्कर्ष 85

चतुर्थ अध्याय

'आधुनिक हिन्दी कविता'-अनुशीलन

4.0 विषय प्रवेश 87

4.1 मैथिलीशरण गुप्त के काव्य की प्रासंगिकता 87

4.2 समसामयिक परिस्थितियों को उजागर करना ही कवि का कर्म होता है: रामनरेश त्रिपाठी 90

4.3 भारतीय दर्शन, चिन्तन एवं भारतीय मानवतावादी परम्परा के समर्थक साहित्यकार जयशंकर प्रसाद 92

4.4 एक भारतीय आत्मा–माखनलाल चतुर्वेदी 94

4.5 निराला की कविताओं की प्रासंगिकता 96

4.6 सुमित्रानन्दन पंत के काव्य विशेषताएँ 99

4.7 भगवतीचरण वर्मा का काव्य सहज अभिव्यक्ति का प्रतीक है 101

4.8 लोकमन की सहजता, सादगी, संवेदनशीलता का प्रतिबिंबन: सुभद्रा कुमारी चौहान 102

4.9 महादेवी वर्मा का काव्य आस्था और आशा का प्रतीक है 104

4.10 बच्चन की रचनाएँ विद्रोह एवं नवजीवन के आग्रह का प्रतीक है 106

4.11 दिनकर के काव्य में नरत्व और नारीत्व का अनुपात है 108

4.12 व्यक्तित्व और स्वातंत्र्य की खोज में अज्ञेय की कविता 110

4.13 नरेन्द्र शर्मा का काव्य लोकमंगल दर्शन और आध्यात्मिक की भावनाओं से ओतप्रोत है 113

4.14 निष्कर्ष 115

पंचम अध्याय

'समकालीन हिन्दी कविता'– आलोचनात्मक दृष्टि

5.0 विषय प्रवेश 118

5.1 प्रकृति के साहचर्य में मुक्ति की तलाश: केदारनाथ अग्रवाल 118

5.2 व्यक्तित्व और स्वातन्त्र्य की खोज: अज्ञेय 120

5.3 कविता का सौन्दर्यवादी–रूपवादी रूझान: शमशेर बहादुर सिंह 122

5.4 कविता में निम्नमध्यवर्गीय जीवन का बयान–नागार्जुन 124

5.5 खुशबू का शिलालेख: भवानी प्रसाद मिश्र 126

5.6 मिट्टी की महिमा का काव्य: शिवमंगल सिंह 'सुमन' 128

5.7 लोक–जीवन और ग्राम्य प्रकृति का साक्षात्कार: त्रिलोचन 130

5.8 भीतरी और बाहरी संघर्ष का काव्य: मुक्तिबोध 133

5.9 कविता की भीतरी नदी: गिरिजाकुमार माथुर 134

5.10 कविता का वैष्णव व्यक्तित्व: नरेश मेहता 137
5.11 खामोश आवाज़ की कविता: विजयदेव नारायण साही 139
5.12 अर्थ और मूल्य की खोज: धर्मवीर भारती 142
5.13 वृहत्तर जिज्ञासा का काव्य: कुंवर नारायण 144
5.14 कविता की निजी पहचान का आग्रह: सर्वेश्वर दयाल सक्सेना 146
5.15 हत्या के विरूद्ध एक कविता: रघुवीर सहाय 148
5.16 एक भटकते कवि का मुक्ति प्रसंग: राजकमल चौधरी 150
5.17 जो घटा है बीसवीं शताब्दी में मनुष्य के साथ: श्रीकान्त वर्मा 152
5.18 आग की ओर इशारा: केदारनाथ सिंह 154
5.19 राजनीति और विरोध की कविता: धूमिल 156
5.20 निष्कर्ष 159

षष्ठ अध्याय

'समकालीन हिन्दी कविता'– अनुशीलन

6.0 विषय प्रवेश 160
6.1 भारतीय जनवादी चेतना के कवि केदारनाथ अग्रवाल 161
6.2 स्वातंत्र्य में ही व्यक्तित्व की सार्थकता निहित है–'अज्ञेय' 163
6.3 आत्मीयता एवं विनम्र 'कवि शमशेर बहादुर सिंह' 166
6.4 निम्न मध्यवर्ग के मसीहा– 'कवि नागार्जुन' 168

6.5 इन्सानियत के गायक–भवानी प्रसाद मिश्र 170

6.6 अपनी असली ज़मीन के पोषक– 'कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' 171

6.7 भारतीय लोकजीवन की पहचान कराने वाले– 'कवि त्रिलोचन' 173

6.8 मानवतावादी परम्परा के वाहक– कवि मुक्तिबोध 175

6.9 प्रकृति और परिवेश में गहरी दिलचस्पी रखने वाले–कवि गिरिजाकुमार माथुर 177

6.10 धरती और प्रकृति को महत्व देना ही नरेश मेहता के काव्य का प्रमुख गुण 178

6.11 अपनी वक्र उक्तियों द्वारा झटके देते हुए विसंगतियों एवं विडम्बनाओं को उभारने वाले–कवि विजयदेव नारायण साही 181

6.12 अर्थ और मूल्य की खोज में धर्मवीर भारती की कविता 183

6.13 जीवन और सार्थकता का निरूपण–कवि कुँवर नारायण 185

6.14 मानव को अपनी पहचान बनाना ज़रूरी है– सर्वेश्वर दयाल सक्सेना 187

6.15 अमानवीय स्थिति से सचेत करना: रघुवीर सहाय 189

6.16 मुक्ति की खोज में–राजकमल चौधरी 191

6.17 बीसवीं सदी की अमानवीय व्यवहार का बयान करना 192

6.18 संपूर्ण मनुष्य की कविता–केदारनाथ सिंह 195

6.19 सामाजिक–राजनीतिक चेतना के कवि–धूमिल 197

6.20 निष्कर्ष 199

सप्तम अध्याय

'रचना के सरोकार'–आलोचनात्मक दृष्टि

7.0 विषय प्रवेश 200

7.1 रचना अर्थ और मूल्य 200

7.2 लेखक का रचना दायित्व और सामाजिक दायित्व 202

7.3 संरचना और रचनाकार की ईमानदारी 204

7.4 रचना संसार बनाम असली संसार 206

7.5 पाठक जनता और साहित्य 208

7.6 अभिव्यक्ति का संकट और रचनाकार का बाह्य संघर्ष 210

7.7 आधुनिकता बोध: नया बनाम पुराना, परम्परा बनाम प्रयोग 211

7.8 नया साहित्य: मूल्यांकन की समस्या 213

7.9 राष्ट्रीयता, राष्ट्र–संकट और साहित्यकार 216

7.10 परम्परागत नैतिकता और लेखक की स्वतन्त्रता 218

7.11 शुद्ध साहित्यिक मूल्य और साहित्येतर प्रतिमान 219

7.12 प्रतिबद्धता राजनीति और साहित्य 221

7.13 विज्ञान, औद्योगिक प्रगति और साहित्य 223

7.14 साठोत्तरी पीढ़ी के नाम कुछ पुराने सवाल 225

7.15 अन्धकार का दर्शन और आस्था का संकट 227

7.16 इतिहासग्रस्तता और अनुभव की संकीर्णता 228

7.17 रचना और सर्जनात्मक आलोचना 230

7.18 युवा विद्रोह: सार्थक विद्रोह की दिशाएँ 232
7.19 समकालीन रचना का यथार्थवादी रूझान 233
7.20 काव्य भाषा: सही भाषा की तलाश 235
7.21 रचना के बुनियादी सरोकार 237
7.22 समकालीन आलोचना का चरित्र 240
7.23 मानवाधिकार, लोकतन्त्र और साहित्य 241
7.24 राज्यसत्ता और साहित्यकार 244
7.25 प्रासंगिकता की प्रासंगिकता 246
7.26 रचना और विचारधारा/जनवादी लेखन 247
7.27 एक भारतीय दृष्टि की खोज 249
7.28 शब्द और कर्म: एक विचार संसद की ज़रूरत 251
7.29 निष्कर्ष 253

अष्टम अध्याय

'रचना के सरोकार'–अनुशीलन

8.0 विषय प्रवेश 255
8.1 रचना की सार्थकता 257
8.2 लेखक/रचनाकार का दायित्व 258
8.3 रचनाकार के लिए ईमानदारी आवश्यक/प्राण तत्व है 259
8.4 रचना यथार्थ परख होनी चाहिए 260
8.5 रचनाकार और उसका अनुभव सामान्यजन से जुड़ा होना चाहिए 261

8.6 आज के रचनाकार की समस्या 262

8.7 पुरानी पीढ़ी एवं नयी पीढ़ी एक दूसरे को स्वीकार करना होगा 263

8.8 मौलिक और स्वस्थ लेखन को आगे लाना नये साहित्य के मूल्यांकन की सबसे बड़ी समस्या है 265

8.9 रचनाकार के लिए राष्ट्रीयता का कोई संकीर्ण अर्थ नहीं होता 266

8.10 सच्चा साहित्य संपूर्ण मानव की अभिव्यक्ति है 268

8.11 कृति का अध्ययन कृति के रूप में करना ही साहित्य समीक्षा की सही दिशा है 269

8.12 रचनाकार की प्रतिबद्धता दुहरी होती है 271

8.13 साहित्य को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि संपन्न होना ही चाहिए 272

8.14 साहित्य का लक्ष्य मानवीय संभावनाओं को उद्घाटन और विस्तार करना है 273

8.15 जीवन को अर्थहीन मान लेने पर साहित्य की बुनियाद ध्वस्त हो जाती है 274

8.16 हर रचना अपने युग की चेतना को नियंत्रित एवं संचालित करती है 275

8.17 आलोचक रचना का पुनः सर्जन करता है 276

8.18 युवा विद्रोह की सार्थकता 278

8.19 समकालीन रचना की यथार्थवादी दृष्टि 279

8.20 काव्य भाषा में एक व्यापक अर्थ की क्षमता होती है 280
8.21 सच्ची रचना रचनाकार की चेतना की गहराईयों से निकली है 281
8.22 आलोचना में एक सन्तुलित दृष्टि की खोज ज़रूरी है 282
8.23 मानवाधिकार एवं लोकतंत्र की भावना को उजागर करने का सफल माध्यम है 'साहित्य' 283
8.24 लेखक का सम्बन्ध सत्ता से नहीं अपने चारों ओर के विराट जीवन से होता है 284
8.25 किसी रचना की प्रासंगिकता किसी स्थूल उपयोगितावादी दृष्टि से नहीं तय की जा सकती 285
8.26 विचारधारा एक जीवन दृष्टि होती है जो सम्पूर्ण रचना प्रक्रिया को प्रभावित करती है 286
8.27 एक भारतीय दृष्टि की खोज की आवश्यकता 288
8.28 शब्द सार्थकता 290
8.29 निष्कर्ष 291

नवम् अध्याय

'कविता क्या है' एक आलोचनात्मक दृष्टि

9.0 विषय प्रवेश 294
9.1 अथातः काव्य मीमांसा 294
9.2 कविरेव प्रजापतिः 297
9.3 अनन्त रूपात्मक जगत् 299

9.4 अपारे काव्य–संसारे 302

9.5 परम अभिव्यक्ति अनिवार 305

9.6 खास कुछ बेताबियों के नाम 308

9.7 वागर्थाविवि सम्पृक्तौ 310

9.8 अंदाजे-बयाँ और 314

9.9 रूप–विधान, संकेत और स्मृति 317

9.10 कविता के पैर और पंख 321

9.11 सुरसरि सम सब कहँ हित होई 324

9.12 निष्कर्ष 326

दशम अध्याय

'कविता क्या है' का अनुशीलन

10.0 विषय प्रवेश 327

10.1 कविता के बुनियादी लक्षण 328

10.2 रचना–प्रक्रिया में कृति व्यक्तित्व की भूमिका 330

10.3 अनन्त रूपात्मक जगत् में तिवारी जी के विचार 332

10.4 रचनाकार की सबसे बड़ी विशेषता उसकी संवेदनशीलता ग्रहणशीलता और सर्जनशीलता होती है 333

10.5 कवि और कविता की महान सफलता 334

10.6 अर्थ को छोड़कर कविता नहीं हो सकती 335

10.7 भाषा की भूमिका बहुआयामी होती है 336

10.8 सच्ची कविता का जन्म बाह्य दबाव में नहीं आंतरिक

विवशता में होता है 338
10.9 रूप विधान में कवि का कर्तव्य 339
10.10 छंद कवि के भीतरी आवेग को वहन करने वाला माध्यम है 341
10.11 काव्य/कविता का प्रयोजन 342
10.12 निष्कर्ष 343

एकादश अध्याय

गद्य के प्रतिमान–आलोचनात्मक दृष्टि

11.0 विषय प्रवेश 345
11.1 एक संघर्षशील लेखक का विश्वसनीय लेखन 345
11.2 प्रेमचंद की दृष्टि में स्वराज्य का रूप 349
11.3 गोदान 352
11.4 बूढ़ी काकी 354
11.5 प्रेमचंद: पत्रकारिता का संघर्ष 355
11.6 आचार्य रामचंद्र शुक्ल की आलोचना 358
11.7 राहुल सांकृत्यायन: जीवन–यात्रा और विचार–यात्रा 359
11.8 देशद्रोही: नैतिक और राजनैतिक प्रश्नों का साक्षात्कार 362
11.9 एक रागात्मक हृदय की व्याप्ति 365
11.10 पुनर्नवा के स्वागत का साहस 367
11.11 सब आँखों के आँसू उजले 368

11.12 शेखर:एक जीवनी: मानवीय अर्थवत्ता की खोज 371

11.13 अंत: प्रक्रियाओं की पहचान 373

11.14 नर के भीतर नारायण की व्यथा 375

11.15 रामविलास शर्मा की आलोचना 376

11.16 विद्यानिवास मिश्र के निबंध 378

11.17 तमस् आधुनिक भारतीय इतिहास की एक त्रासदी 380

11.18 भाषा की लपट 381

11.19 नामवर सिंह की आलोचना की सीमाएँ 383

11.20 अशोक वाजपेयी की आलोचना 384

11.21 आलोचना का आत्मसंघर्ष और सर्जनात्मक आलोचना 386

11.22 पद्धतियों और प्रतिमानों के सीमाएँ: समाकालीन आलोचना संदर्भ 388

11.23 आंचलिक उपन्यास और ग्रामीण यथार्थ 390

11.24 'कसप' के बारे में एक पत्र 393

11.25 'मुझे चाँद चाहिए' आकांक्षा और नियति की कथा 394

11.26 ज्ञानरंजन की कहानियाँ 396

11.27 निष्कर्ष 398

द्वादश अध्याय

गद्य के प्रतिमान–अनुशीलन

12.0 विषय प्रवेश 400

12.1 प्रेमचंद के लेखन की सहजता 402

12.2 स्वतंत्रता आन्दोलन में प्रेमचंद का योगदान 403

12.3 गोदान उपन्यास का मूल्य 405

12.4 प्रेमचंद की रचना की प्रामाणिकता 407

12.5 प्रेमचंद लेखक ही नहीं संपादक एवं पत्रकार भी है 408

12.6 शुक्ल जी सफल एवं सार्थक आलोचक है 410

12.7 राहुल जी की यात्रा 412

12.8 देशद्रोही उपन्यास की प्रासंगिकता 414

12.9 संवेदनशीलता द्विवेदी जी के लेखकीय व्यक्तित्व की आत्मा है 416

12.10 प्रगतिशील मानवतावादी दृष्टि का परिचय कराना 418

12.11 महादेवी के काव्य में दुख एवं पीड़ा एवं व्यापक मानवीय करूणा के रूप में आती है 419

12.12 'शेखर एक जीवनी' की प्रासंगिकता 421

12.13 रेणु की कहानियों की प्रासंगिकता 423

12.14 हिन्दी आलोचना–साहित्य को समृद्ध करने की प्रेरणा 424

12.15 भारतीय संस्कृतिक पोषक 426

12.16 तमस की प्रासंगिकता 428

12.17 हरिशंकर परसाई की प्रासंगिकता 429

12.18 नामवर की प्रासंगिकता 430

12.19 समकालीन मनुष्य का प्रोषक 431

12.20 सर्जनात्मक समीक्षा की प्रासंगिकता 433

12.21 समकालीन आलोचना की प्रासंगिकता 434

12.22 आंचलिक उपन्यासों का उद्देश्य गंभीर और सामाजिक होता है 436
12.23 मनुष्य की आकांक्षा और उसकी नियति की कथा 437
12.24 ज्ञानरंजन की कहानियों का महत्व 439
12.25 निष्कर्ष 440
*** उपसंहार** 443
*** परिशिष्ट–1 (दूरभाष द्वारा संपर्क)** **452**
*** परिशिष्ट–2 (ग्रंथ सूची)** **454**

उपसंहार

(शोध संथापनाएँ)

विश्वनाथप्रसाद तिवारी विरले हिन्दी लेखकों में हैं, जिन्होंने लगभग पूरा भारत ही नहीं, आधी से अधिक दुनिया भी घूमी–देखी है। वे गाँधीवादी है कम खर्च और श्रम को ही महत्व देते हैं। वे विचारवान और विचारशील कवि और व्यक्ति दोनों हैं। उन्हें 'सद्विचारों का संवाहक' भी कहा जा सकता है। वे अन्याय और अनौचित्य को बर्दाश्त नहीं करते हैं। तिवारी जी के व्यक्तित्व के कई रंग है। वे एक अच्छे कवि, संपादक, आलोचक, पर्यटक है। वे अपनी पत्रिका 'दस्तावेज़' के लिए पूरी तरह से समर्पित है।

पिछले पाँच दशकों से कविता, आलोचना, निबंध एवं अन्य गद्य विधाओं को अपनी लेखनी से जीवंत बनाने वाले विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने सच्चे अर्थों में अपने समूचे जीवन को रागात्मक बनाया है। लोहिया के विचारों का मान रखने वाले तिवारी की दृष्टि में भारत के लोकतंत्र की सबसे अच्छी तस्वीर वह थी, जिसमें हर एक को बराबरी का दर्ज़ा प्राप्त हो। अन्याय, गैर बराबरी, शोषण, असमानता इस सबके विरूद्ध एक प्रत्याख्यान उनकी कविताओं में लगातार बना रहा है। यही वजह है कि उनकी आलोचना भी उनकी कविताओं की तरह ही, उनके ईमानदार मनुष्य की जिजीविषा को प्रक्षय देती है।

प्रंस्तुत शोध–प्रबंध का विषय 'विश्वनाथ प्रसाद तिवारी' की अलोचनात्मक दृष्टि को लेकर है। प्रसिद्ध कवि एवं आलोचक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की कुल पाँच आलोचनात्मक ग्रंथों– 'आधुनिक हिन्दी कविता' (1977), 'समकालीन हिन्दी कविता' (1982), 'रचना के सरोकार' (1987), 'कविता क्या है' (1989) एवं 'गद्य के प्रतिमान' (1996) को प्रस्तुत शोध हेतु चयनित किया गया है।

आलोचना का व्युत्पत्ति अर्थ 'सम्यक् निरीक्षण' है। मानव की अनेक अन्य कृतियाँ अथवा संवेदनाओं की भाँति आलोचना की प्रवृत्ति भी चिरकाल से सिद्ध है किन्तु जीवन के व्यवहार क्षेत्र की तुलना में साहित्य क्षेत्र में इसका प्रवेश पर्याप्त विलम्ब से हुआ। इससे स्पष्ट है कि पहले सर्जनात्मक साहित्य अस्तित्व में आता है, उसके बात आलोचना की प्रेरणा अथवा आवश्यकता का अनुभव किया जाता है। किन्तु अब हिन्दी आलोचना का क्षेत्र इतना विस्तृत हो चुका है और उसमें इतनी विविधरूपिणी विधियों को प्रश्रय मिल चुका है कि आलोचना अथवा उसके पर्यायवाची 'समीक्षा' समालोचना प्रभृति शब्दों का अर्थ मात्रा गुण–दोष विवेचन सिद्ध करना अनुचित होगा। किसी कृति की विशेषताओं पर विचार करना, उसकी उपलब्धियों एवं अभावों का मूल्यांकन करना, सहृदयों के हृदय पर उसकी प्रतिक्रिया का विश्लेषण करना, उसकी श्रेष्ठता अथवा अभावों के विषय में निर्णय देना, उसे श्रेणीबद्ध करना आदि अनेक कार्य आलोचना के अंतर्गत आते हैं। वस्तुतः हिन्दी में 'आलोचना' शब्द अंग्रेजीर के 'क्रिटिसिज़्म' के पर्याय रूप में प्रस्तुत होता है, जिसका अर्थ 'मूल्यांकन' अथवा 'निर्णय करना'। आलोचना के लिए आलोचक को एक निश्चित विचारक्रम और शिल्प–बोध अपनाना होता है। वह सर्वप्रथम आलोच्य कृति का अध्ययन करके उसमें निहित मूल भाव को ग्रहण करता है और पुनः उसकी व्याख्या और विश्लेषण द्वारा उसके महत्व का मूल्यांकन करता है। इस प्रकार आलोचना पद्धति के तीन मुख्य अवस्थान हैं–विषयबोद, व्याख्या–विश्लेषण और मूल्यांकन।

प्रस्तुत शोध के आलोच्य पुस्तकों के क्रम में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की आलोचनात्मक पुस्तक 'आधुनिक हिदी कविता' को लिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में आलोचक तिवारी जी ने 'आधुनिक हिन्दी कविता' के 13 प्रमुख कवियों– मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, माखनलाल चतुर्वेदी, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला,

सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा, भगवतीचरण वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, हरिवंश राय बच्चन, रामधारी सिंह दिनकर, नरेन्द्र शर्मा और अज्ञेय की कविताओं का विश्लेषण–मूल्यांकन किया। इन के कवियों के काव्य अध्ययन अपने संक्षिप्त रूप में विराट विस्तार को समेटने वाला है। यह उन कवियों की मुख्य काव्य विशेषताओं को उद्घाटित करता है, साथ ही एक लंबी–कालावधि की काव्य प्रवृत्तियों को भी उद्घाटित करता है। जैसे मैथिलीशरण गुप्त के काव्य की प्रासंगिकता, समसामयिक परिस्थितियों को उजागर करना ही कवि का कर्म होता है इस बात को रामनरेश त्रिपाठीं की कविताओं से दर्शाया गया है। भारतीय दर्शन, चिंतन एवं भारतीय मानवतावादी परंपरा के समर्थक साहित्यकार के रूप में जयशंकर प्रसाद तिवारी को महत्व दिया गया है। माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं से एक भारतीय आत्मा उभर रही है तो, निराला की कविताओं की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए सुमित्रानन्द पंत के काव्य की विशेषताओं को उभारा गया है। भगवतीशरण वर्मा का काव्य सहज अभिव्यक्ति का प्रतीक है। लोकमन की सहजता, सादगी, संवेदनशीलता का प्रतिबिंब सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में हैं। महादेवी वर्मा का काव्य आस्था और आशा का प्रतीक है तो बच्चन की रचनाएँ विद्रोह एवं नवजीवन के आग्रह का प्रतीक है। दिनकर के काव्य में नरत्व और नारीत्व का अनुपात है। व्यक्तित्व और स्वतंत्र की खोज में अज्ञेय की कविता का स्थान है तो अन्तः नरेन्द्र शर्मा का काव्य लोकमंगल दर्शन और आध्यात्मिक की भावनाओं से ओतप्रोत है। इस प्रकार तिवारी की 'आधुनिक हिन्दी कविता' में निहित कुल 14 प्रसिद्ध कवियों के काव्यों में उपर्युक्त मूल बिंदुओं का उल्लेख दृष्टिगोचर होता है। इन कवियों के काव्यों की प्रासंगिकता सदा बनी रहेगी।

आगे विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की दूसरी आलोचनात्मक ग्रंथ 'समकालीन हिन्दी कविता' रही है। प्रस्तुत पुस्तक में 'समकालीन हिन्दी कविता के 19 महत्वपूर्ण कवियों

के काव्य का विश्लेषण एवं मूल्यांकन हुआ है। ये कवि परस्पर भिन्न रूचियों के हैं तथा इनकी काव्य संवेदनाएँ और काव्य चिंताएँ एक–दूसरे से अलग है। समकालीन हिन्दी कविता के प्रवृत्तिगत अध्ययन से उसकी एक विकास परंपरा का पता चलता है। आलोचक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी ने कवियों के शब्द प्रयोगों का बारीकी से विश्लेषण करते हुए उनकी काव्य चिंताओं का उद्घाटन किया है। प्रस्तुत पुस्तक के अनुशीलन से शोध के दौराअन हमें यह स्पष्ट हो जाता है कि कवि केदारनाथ अग्रवाल भारतीय जनवादी चेतना के कवि है तो अज्ञेय की कविताओं में स्वतंत्र में ही व्यक्तित्व की सार्थकता झलकती है। आगे आत्मीयता एवं विनम्र कवि के रूप में शमशेर बहादुर सिंह की पहचान हो पाती है। निम्नमध्यवर्ग की मसीहा कवि नागार्जुन है तो इन्सानियत के गायक है भवानीप्रसाद मिश्र। कवि शिवमंगल सिंह की कविताओं में अपनी असली ज़मीन के प्रति मोह है तो कवि त्रिलोचन भारतीय लोक जीवन की पहचान कराने वाले हैं। मानवतावादी परंपरा के वाहक कवि मुक्तिबोध है तो प्रकृति और परिवेश के प्रेमी गिरिजाकुमार माथुर है। धरती और प्रकृति को महत्व देना ही नरेश मेहता के काव्य का प्रमुख गुण है। कवि विजयदेव नारायण साही की कविताओं में विसंगतियों एवं विडंबनाओं को उभारने का प्रयास हुआ है। धर्मवीर भारती की कविताओं में अर्थ और मूल्य की खोज पाई गई है। जीवन और सार्थकता का निरूपण कवि कुंवरनारायण में है। मानव को अपनी पहचान बनाना ज़रूरी है कविताओं में पाया गया है। रघुवीर की कविताएँ अमानवीय स्थिति से सचेत करती है तो राजकमल चौधरी की कविताएँ मुक्ति की खोज में है। श्रीकान्त वर्मा की कविताओं में बीसवीं सदी की अमानवीय व्यवहार का बयान पाया गया है। केदारनाथ सिंह की कविता सपूर्ण मनुष्य की कविता है। अंत में धूमिल की कविता का उल्लेख है जिसमें सामाजिक राजनीतिक चेतना पाई गई है।

आगे शोध के दौरान क्रम में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी की रचना के सरोकार का अनुशीलन है। प्रस्तुत पुस्तक में नये साहित्य से संबंधित अनेक समस्याओं और प्रश्नों पर विचार किया गया है। इनमें कई रचना और साहित्य के बुनियादि प्रश्न है। जो हर युग में नए शब्दों के चोले में अपना नया रूप लेकर प्रकट होते हैं। उनका नए रूप में उपस्थित होना ही रचना और साहित्य के विकास का सूचक है। प्रस्तुत पुस्तक के अधिकांश निबंध नये साहित्य की मान्यताओं उसके संदर्भ उठाए गए प्रश्नों और उसके समर्थक या विरोधी तर्कों पर आधारित है। एक प्रकार से यह पुस्तक नये साहित्य का तर्कशास्त्र है। तिवारी जी ने परस्पर विरोधी और समानांतर चलने वाली विचारधाराओं के तर्कों को झुठलाकर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस पुस्तक के अधिकांश निबंध रचना की सार्थकता की खोज है और रचना के बुनियादी सरोकारों की। प्रस्तुत पुस्तक में विषय के क्रमानुसार प्रथमतः रचना की सार्थकता के दायित्व को बल देते हुए रचनाकार के लिए ईमानदारी आवश्यक है, इस बात को महत्व दिया गया है। आगे रचना यथार्थपरक होना चाहिए, रचनाकार और उसका अनुभव सामान्य जन से जुड़ा होना चाहिए। इस बात पर बल देते हुए आज के रचनाकारों की समस्याओं को उभारा गया है।

आगे यह बताया गया है कि पुरानी पीढ़ी एवं नई पीढ़ी एक–दूसरे को स्वीकार करना होगा। मौलिक और स्वास्थ्य लेखन की आगे लाना नये साहित्य के मूल्यांकन की सबसे बड़ी समस्या है। रचनाकार के लिए राष्ट्रीयता का कोई संकीर्ण अर्थ नहीं होता है। इस बात को बल दिया गया है। सच्चे साहित्य संपूर्ण मानव की अभिव्यक्ति है कृति का अध्ययन कृति के रूप में करना ही साहित्य समीक्षा की सही दिशा है। रचनाकार की प्रतिबद्धता दुहरी होती है। साहित्य को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि संपन्न होना ही चाहिए इस बल दिया गया है। आगे यह स्पष्ट किया गया है कि साहित्य का लक्ष्य मानवीय

संभावनाओं को उद्घाटन और विस्तार करना है। जीवन को अर्थहीन मान लेने पर साहित्य की बुनियादी ध्वस्त हो जाती है। हर रचना अपनी युग की चेतना को नियंत्रित एवं संचालित करती है। आलोचक रचना का पुनःसर्जन करता है इस बात को स्पष्ट करते हुए युवा विद्रोह की सार्थकता पर बल दिया गया है। आगे समकालीन रचना की यथार्थवादी दृष्टि पर प्रकाश डालते हुए काव्य भाषा में एक व्यापक अर्थ की क्षमता को दर्शाया गया है। सच्ची रचना रचनाकार की चेतना की गहराईयों से निकलती है। आलोचना में एक संतुलित दृष्टि की खोज ज़रूरी है। मानवांधिकार एवं लोकतंत्र की भावना को उजागर करने का सफल माध्यम साहित्य है इस बात को स्पष्ट किया गया है। लेखक का संबंध सत्ता से नहीं अपने चारों ओर के विराट जीवन से होता है इस विचार प्रकट करते हुए आगे किसी रचना की प्रासंगिकता किसी स्थूल उपयोगितावादी दृष्टि से नहीं तय की जा सकती। इस बात का भी उल्लेख किया गया है} अंतः विचारधारा एक जीवंत दृष्टि है जो सम्पूर्ण रचना प्रक्रिया को प्रभावित करती है। एक भारतीय दृष्टि की खोज की आवश्यकता को जताते हुए शब्द सार्थकता पर बल दिया गया है।

शोध के आगे के क्रम में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की 'कविता क्या है' का अनुशीलन है। 'कविता क्या है' इस प्रश्न के उत्तर में कोई एक सर्वसम्मत परिभाषा दे पाना कठिन है। कविता के कुछ बुनियादी तत्व होते हैं जिनके कारण विविध कालों, विविध भाषाओं में लिखी गई विविध भंगिमातों वाली कविताएँ कविता के एक विशिष्ट रूप में पहचान ली जाती है। कविता के इन्हीं बुनियादी लक्षणों की चर्चा प्रस्तुत पुस्तक में हुई है। प्रस्तुत पुस्तक में कुल '4' शीर्षक के अंतर्गत काव्य चिंतन पर तिवारी जी का मूल्यांकन है। कविता के बुनियादी लक्षण पर प्रकाश डालते हुए रचना प्रक्रिया में कृति–व्यक्तित्व की भूमिका को स्पष्ट किया गया है। अनंत रूपात्मक जगत् में तिवारी जी

के विचार है। रचनाकार की सबसे बड़ी विशेषता उसकी संवेदनशीलता, ग्रहणशीलता अर सर्जनशीलता होती है। इस बात पर बल देते हुए कवि और कविता की महान सफलता पर प्रकाश डाला गया है। अर्थ को छोड़कर कविता नहीं हो सकती भाषा की भूमिका बहुआयामी होती है सच्ची कविता का जन्म बाह्य दबाव में नहीं। अंतरिक्त विवशता में होता है कि इस बात पर भी बल दिया गाय है। आगे रूप विधान में कवि का कर्तव्य को स्पष्ट करते हुए छंद कवि की भीतरी आवेग को वहन करने वाला माध्मम है, इस बात पर प्रकाश डाला गया है। अंत में काव्य का कविता के प्रयोजन को स्पष्ट किया गया है।

आगे शोध के क्रम हेतु तिवारी जी आलोचनात्मक पुस्तक 'गद्य के प्रतिमान' के मूल बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए उसके अनुशीलन पक्ष को उभारा गया है प्रस्तुत पुस्तक में हिन्दी महत्वपूर्ण गद्य लेखकों और गद्य कृतियों पर अंतर्दृष्टि के साथ विचार किया गया है। प्रेमचंद, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, राहुल सांकृत्यायन, हजारी प्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, अज्ञेय, रेणु, रामविलास शर्मा, विद्यानिवास मिश्र, नामवर सिंह, हरिशंकर परसाई आदि के रचनात्मक आलोचनात्मक गद्य का यह विश्लेषण अत्यंत प्रखर और गंभीर है। लेखक ने गोदान, शेखर:एक जीवनी, देशद्रोही, पुनर्नवा, तमस, कसप तथा मुझे चाँद चाहिए आदि प्रसिद्ध उपन्यासों का अलग से मूल्यांकन किया है। यह मूल्यांकन एक तटस्थ और सहृदय है। यह मूल्यांकन एक तटस्थ और सहृदय मूल्यांकन है। कवि आलोचक डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी स्वयं एक रचनात्मक गद्यकार है। उनके इन आलोचनात्मक निबंधों में उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा देखी जा सकती है। साथ ही एक गंभीर पाठक की निर्मम बेधक दृष्टि भी। प्रस्तुत पुस्तक के अनुशीलन के क्रम में प्रेमचंद लेखन की सहजता पर प्रकाश डाला गया है। आगे स्वतंत्रता आंदोलन में प्रेमचंद का योगदान को स्पष्ट करते हुए गोदान उपन्यास के मूल तत्व को उभारा गया है।

साथ ही साथ प्रेमचंद की रचना की प्रामाणिकता को दर्शाया गया है। आगे एक सफल संपादक एवं पत्रकार के रूप में प्रेमचंद की भूमिका को भी दर्शाया गया है। आगे सफल एवं सार्थक आलोचक के रूप में शुक्ल जी को दर्शाया गया है। आगे राहुल जी यात्रा वृत्तांत पर प्रकाश डाला गया है। यशपाल का उपन्यास देशद्रोही की प्रासंगिकता को दर्शाया गया है।

आगे हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के संवेदनशीलता पक्ष को उभारा गया है, प्रगतिशील मानवतावादी दृंष्टि का परिचय पुनर्नवा उपन्यास के माध्यम से कराया गंया है। महादेवीए के काव्य में दुख एवं पीड़ा एक व्यापक मानवीय करूणा के रूप में आते हैं। आगे 'शेखर: एक जीवनी' रेणु की कहानियों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला गया है। तदुपरांत हिन्दी आलोचना साहित्य को समृद्ध करने की प्रेरणा की गई है। अत: भारतीय संस्कृति के पोषक रामविलास शर्मा पर प्रकाष डाला गया है।

'तमस' उपन्यास की प्रासंगिकता को दर्शाते हुए हरिशंकर परसाई, नामवर सिंह की प्रासंगिकता को उभारा गया है। समकालीन मनुष्य का पोषक अशोक वाजपेयी पर प्रकाश डालते हुए। समकालीन आलोचना की प्रासंगिकता की बात उठाई गई है। आगे आंचलिक उपन्यासों के उद्देश्य को दर्शाया गया है। सुरेंद्र वर्मा का उपन्यास 'मुझे चांद चाहिए' के माध्यम से मनुष्य की आकांक्षा और उसके नियति की कथा कहीं गई है। अतंत: ज्ञानरंजन की कहानियों का महत्व दर्शाया गया है।

इस प्रकार कवि, आलोचक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी के आलोचनात्मक ग्रंथों– आधुनिक हिन्दी कविता, समकालीन हिन्दी कविता, रचना के सरोकार, कविता क्या है एवं गद्य के प्रतिमान के मूल्यांकन के मूल बिंदुओं के माध्यम से जो अनुशीलन हमने शोध के दौरान करने का लघु प्रयास किया है। यह सच है कि विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी की आलोचनात्मक दृष्टि को पकड़ पाना टेढ़ी खीर के समान है। तिवारी जी के

पुस्तकों की प्रत्येक पंक्ति विचारोत्तेक और विचारणीय है। अंत में कहा जा सकता है कि प्रभाववादी आलोचक कहे जाने का खतरा उठाकर तिवारी जी ने रचना की आत्मा से साक्षात्कार की कोशिश की है।